साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता

SAHITYA AKADEMI FELLOWSHIP

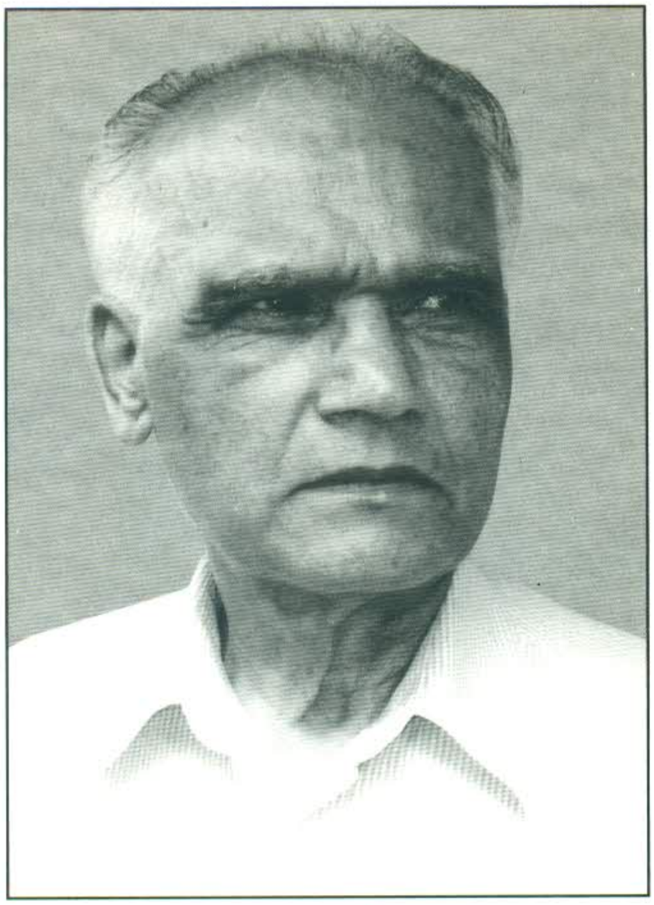

एस.एल. भैरप्पा
S.L. BHYRAPPA

5 July 2015, Bengaluru

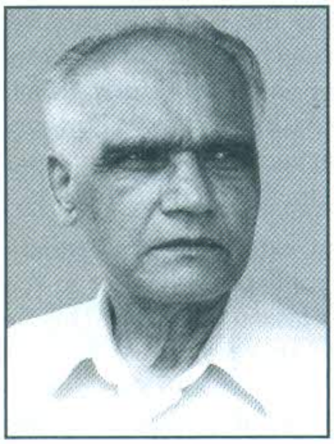

एस.एल. भैरप्पा
S.L. BHYRAPPA

जीवित किंवदंती बन चुके साहित्यकार

एस.एल. भैरप्पा, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता अर्पित कर रही है, प्रख्यात कन्नड रचनाकार हैं जिन्होंने पाँच दशकों के अपने रचनाकाल में 20 से अधिक उपन्यासों की रचना की है।

किसी जीवित किंवदंती का परिचय भला कैसे दिया जा सकता है? वह भी महामानव की भाँति जिसने तेईस उपन्यासों और आश्चर्यजनक ईमानदारी से लिखी आत्मकथा जैसी रचनाओं के साथ आधी सदी तक साहित्यिक भू क्षेत्र में अपने लंबे-लंबे डगों से चहलक़दमी की हो? सर्वाधिक बिक्री वाला ऐसा रचनाकार जिसके उपन्यास, घोषणा होते ही दूकान में पहुँचने से पहले ही बिक जाते हों? ऐसा रचनाकार जिसने आभिजात्य और लोकप्रिय जैसे विरोधाभासों को एक साथ साध रखा हो? अपने अंग्रेजी में अनूदित आठ उपन्यासों के साथ जो भारत में सर्वाधिक अनूदित उपन्यासकारों में शामिल हों? जिनका लेखन साहित्य, सौंदर्यशास्त्र, दर्शन और संगीत का संगम हो? हाँ, आप संतेशिवरा लिंगण्णैया भैरप्पा हैं जिनके बारे में इतना ही नहीं, इससे अधिक और भी बहुत कुछ है।

एक कहावत है कि ''तथ्य अधिकतर कल्पना से अधिक अनजाने होते हैं''। भैरप्पा के बारे में यह कहावत अक्षरश: सही साबित होती है। उनका जीवन साहस, धैर्य और संघर्षशीलता की दास्तान है। उनके धैर्य और कठिनाई भरे जीवन का अंदाज़ा मात्र एक घटना से लगाया जा सकता है। जब वह सिर्फ़ पंद्रह बरस के थे, उन्हें अपने भाई का शव अपने कंधों पर ले जाना पड़ा और अंतिम संस्कार झाड़ियों और सूखे पत्तों से करना पड़ा था। कुछ और घटनाओं का ज़िक्र जो उन्होंने अपने शरीर और आत्मा की समरसता बनाने के लिए किया था, को याद करना हृदयविदारक है। उन्हें भगवान भरोसे चलने वाले छोटे-से क़स्बे में स्थित छोटे-से होटल में लोगों की मेज़ पर खाना परोसने का काम करना पड़ा था। उन्होंने घूम-घूमकर अगरबत्ती बेचने वाले सेल्समैन का काम भी किया। गाँव में लगने वाले साप्ताहिक मेलों में उन्हें शर्बत बेचना पड़ा। गाँव में पर्दे पर लगने वाले सिनेमा के लिए उन्होंने दरबान और गेट पर टिकट-संग्रह करने वाले का काम भी किया। इतना ही नहीं यह कठिनाइयों की पराकाष्ठा थी कि उन्हें बांबे सेंट्रल रेलवे स्टेशन पर कुली के रूप में काम करना पड़ा। इस तरह विविधताओं और कठिनाइयों से

A LIVING LITERARY LEGEND

S.L.Bhyrappa on whom Sahitya Akademi is conferring its fellowship today is a prominent Kannada writer, author of more than twenty novels in a career extending over five decades.

How does one introduce a legend? As a colossus who has been striding the literary landscape for more than half a century with twenty three novels and a stunningly honest autobiography to his credit? As a best-selling author whose novels are sold out as soon as they are announced, even before they are on the shelves of bookshops? As a paradox of being elitist and popular simultaneously? As the most translated novelist in India today with eight of his novels translated into English? As a writer whose fiction is a remarkable combination of Literature, Aesthetics, Philosophy and Music? Yes, Santheshivara Ligannaiah Bhyrappa is all this and more – much more.

There is a saying, "Fact is stranger than fiction". This is literally true in the case of Bhyrappa whose life is an illustration of this adage. This is the story of a man of courage, fortitude and fighting spirit. The limit of his endurance and hardship may be recalled with just one incident. He had to carry the dead body of his brother on his shoulder and cremate it with shrubs and dry bushes when he was fifteen. A brief recollection of the odd jobs he had to do to keep body and soul together are heartrending. He had to wait on tables as a server in a small hotel in a godforsaken small town. He was a travelling salesman selling "Agarbathis". He had to sell "sharbat" at weekly village market days. He worked as a ticket-collector and gatekeeper at a village tent cinema. The ultimate limit was he worked as a porter in Bombay Central Railway

भरे उनके जीवन को तीन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है—घोर दरिद्रता, असीम कठिनाई और निस्पृह धैर्यशीलता। किशोरावस्था में मुंबई में किए गए उनके संघर्षों ने उन्हें ऐसी अंतर्दृष्टि और साहस दिया कि स्पष्टवादिता उनके व्यवहार का अंग बन गई। सोलह बरस की उम्र होते-होते भैरप्पा ने अपने दैनिक जीवन से इतने अनुभव ग्रहण कर लिए थे जितने कि अन्य लोग पूरे जीवन भर में नहीं कर पाते।

भैरप्पा का जन्म 20 अगस्त, 1931 को हास्सन ज़िला के चन्नारायपतन तालुके के संतेशिवरा नामक छोटे से गाँव के अत्यंत ग़रीब परिवार में हुआ था। इनका गाँव नारियल गाँव के नाम से जाना जाता है। इनकी यह जन्मभूमि, वहाँ का जीवन और संस्कृति इनके छोटे-छोटे शाब्दिक चित्रों में उपस्थित रही है, जो इनकी रचनाओं को मज़बूत बनाती रही है। भैरप्पा की उपलब्धि यह है कि इन्होंने स्थानीय भाषाओं के प्रामाणिक स्वाद को गँवाए बिना सार्वभौमिक बना दिया है। इनके पिताजी परिवार के पालन-पोषण में ग़ैर ज़िम्मेदार और उदासीन थे। इनकी माता गौरम्मा का साहस ही था कि उन्होंने अपने बूते आठ बच्चों वाले परिवार को पाला-पोसा जिसमें भैरप्पा तीसरे स्थान पर थे। दुर्भाग्य से इनकी माता को तीन बच्चे खोने पड़े। वे सभी प्लेग का शिकार हुए और अंततः इनकी माता भी। ईश्वरभीरू, पवित्र और उदार महिला के रूप में माता ने भैरप्पा को प्रेरित किया, जीवन का पाठ पढ़ाया और सुदृढ़ चरित्र का निर्माण किया। अपने अनंत कार्यों के बीच, माता गौरम्मा महाभारत की कथाएँ गाकर इन्हें सुनाया करती थीं और इसका प्रभाव इनकी रचनाओं पर भी पड़ा। इनकी महानतम कृति *पर्व* में आलोचक इसका प्रभाव गहरे से देखते हैं, जो प्रसंगवश इनकी माता गौरम्मा को सप्रेम समर्पित है। यह याद करना और भी महत्त्वपूर्ण है कि इसे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित किया गया था, जिसका हाल में ही अकादेमी द्वारा दूसरी बार पुनर्मुद्रण किया गया। भैरप्पा का पहला उपन्यास *भीमकाय,* जब वह कॉलेज छात्र थे, तभी प्रकाशित हो गया था। जबकि उनका सबसे नया उपन्यास *यान* अभी पिछले बरस 2014 में प्रकाशित हुआ है। 1958 से आज तक उनके उपन्यास गंगा की तरह सतत् प्रवाहमान हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख किया जा सकता है, *वंशवृक्ष* (1965) में मनुष्य जीवन में आनुवांशिकता और जीन्स के महत्त्व का विषय उठाया गया है। इस उपन्यास की विशिष्टता यह है कि इसका अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद स्वयं लेखक द्वारा किया गया है। *तब्बालियु नीनादे मगने* (1968) प्रसिद्ध कन्नड लोककथा *गोविना हाडु* से संबंधित है। *नई नेरालु* (1968) पुनर्जन्म के सिद्धांतों का गहराई से अन्वेषण करता है। *गृहभंग* (1970) एक तरह का आत्मकथात्मक उपन्यास है जबकि *दातु* (1973) समाज में पसरी जाति-व्यवस्था को परत दर परत उघाड़ता चलता है। *पर्व* (1979) को हम अपने शास्त्रीय महाकाव्य *महाभारत* के प्रतिलेखन के रूप में देख सकते हैं। *साक्षी* एक गंभीर शब्दों वाला उपन्यास है जो तकनीकी वेदांतिक पद है और असत्य तथा सत्य का तत्त्वान्वेषण करता है। *तंतु* (1993) एक समकालीन महाकाव्यात्मक उपन्यास है जो राजनीति, समाज और बदलते मूल्यों के दर्पण के समान है। *सारथा* (1998) एक दृश्यावलियों से युक्त ऐतिहासिक उपन्यास है जो आठवीं शताब्दी के जीवन को शब्दों में पुनर्जीवित करता है। *मंद्र* (2002) एक संगीतमय उपन्यास है, *अवर्ण* (2007) उनका दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है, जो मुगल काल से संबंधित है। *यान* (2014) उनका नवीनतम उपन्यास है जो प्रत्यक्षतः विज्ञान कथालोक से संबंधित है मगर मनुष्य के आंतरिक आध्यात्मिक आकाश

Station. Such has been his early life – a life of penury, hardship and stoic endurance. His teenage struggles in Mumbai gave him the no-nonsense attitude which makes him call a spade a spade. By the time Bhyrappa was sixteen, he had more experience of daily lived life than most people have in their entire lives.

Bhyrappa was born in an extremely poor family on 20th August 1931 at Santheshivara, a hamlet in the Channarayapatna Taluk of Hassan District. This is known as the coconut county. This region, its life and culture has been presented in vignettes and strengthens his works. Bhyrappa's achievement is that he raises the regional to the universal level without losing any of the authentic flavor. His father was rather irresponsible and indifferent in maintaining his family. It was his mother Gowramma who bore the brunt of raising the family of eight children, Bhyrappa being the third. She was unfortunate in losing three of her children. Plague took its toll and she herself became a victim. A god-fearing, pious and noble lady, it was she who inspired, taught and moulded the character of Bhyrappa. In the midst of unending chores, she would recite the Mahabharata to him and this effect is seen in what many critics, have felt is his *magnum opus – Parva,* which, incidentally, is dedicated to her lovingly. It is important to remember that this is a Sahitya Akademi publication which saw its second reprint by the Akademi recently. Bhyrappa's first novel *Bhimakaya* was published when he was still a college student. His latest novel *Yaana* was published in 2014. From 1958 till date his novels are streaming forth like the River Ganga. Just to mention a few of them, *Vamshavriksha* (1965) deals with heredity and 'genes'. The speciality of this novel is that it has been translated by the author himself into English. *Tabbaliyu Ninade Magane* (1968) is related to the famous Kannada folk-tale "*Govina Haadu*". *Nayi Neralu* (1968) explores the concept of metempsychosis, *Grihabhanga* (1970), a kind of autobiographical novel, *Daatu* (1973) deals with the caste system. In *Parva* (1979) we see the transcreation of one of our epics, *Mahabharata, Saakshi* is a loaded word – a technical Vedantic term and is about the theme of Falsehood and Truth. *Tantu* (1993) is a contemporary epic-novel and holds a mirror upto life – political, social and changing values. *Sartha* (1998) *par excellence* is a picaresque, historical novel which recreates the eighth century. *Mandra* (2002) a "musical" novel, *Avarana* (2007) is his second historical novel and deals with the Moghul period. *Yaana* (2014) is his latest novel, taking off apparently from Science Fiction but exploring inner spiritual space. It is perhaps significant

का तत्त्वान्वेषण करता है। संभवत: यह महत्त्वपूर्ण है कि भौतिकता (*भीमकाय* एक मल्लयोद्धा की कहानी है) से शुरू करके वे आंतरिक आध्यात्मिक यात्रा वाले तत्त्वमीमांसक उपन्यास *यान* पर समाप्त करते हैं। अंतत: हमारी परंपरा में मनुष्य के जीवन की यात्रा भी भौतिक (शरीर) से शुरू होकर तत्त्वज्ञान (आत्म) पर समाप्त होती है। यही मनुष्य-जीवन और अंतत: साहित्य का भी उद्देश्य है। क्या इस बात से कोई भी इन्कार कर सकता है?

संगीत के प्रति भैरप्पा का प्रेम जन्मजात है जो एक बच्चे के रूप में भी बिलकुल स्पष्ट था। अपनी आत्मकथा में उन्होंने एक स्थान पर लिखा था, "केवल संगीत मुझे मेरे भीतर खींचता है और मुझे आत्मदर्शी बना देता है। इसके अतिरिक्त ऐसी जादुई, रहस्यमयी, चुंबकीय शक्ति किसी अन्य चीज़ में नहीं है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और मेरी रचनात्मक ऊर्जा और प्रेरणा में एक निश्चित अंतस्सबंध है।" पंडित रविशंकर से लेकर अली अकबर तक मुश्किल से कोई ऐसा जाना-माना संगीतकार होगा जिससे भैरप्पा परिचित न हों। कुमार गंधर्व के प्रति उनका प्रेम उतना ही अधिक है जितनी प्रशंसा वे चौरसिया जी की करते हैं। कुछ बड़े चरित्र, जिनकी उन्होंने रचना की है वे या तो संगीतकार हैं या संगीत के छात्र रहे हैं। *तंतु* में होन्नाथी और *सारथा* में चंद्रिका से लेकर *मंद्र* में आए कुछ चरित्र जैसे मधुमिता, चंपा, ओमकार बाबा, राजा साहिब और अंतत: उच्चतम स्थान पर गिने जाने योग्य मोहनलाल संगीत की दुनिया से संबंधित रहे। *मंद्र* के लिए ही अंतत: भैरप्पा को सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार, सरस्वती सम्मान मिला। *मंद्र* में विभिन्न प्रकार के रागों का विस्तृत विश्लेषण है। *मंद्र* के विषय में विशिष्ट बात यह है कि भैरप्पा इन रागों के साथ विभिन्न चरित्रों को इस तरह संयुक्त और आंकलित करते चलते हैं, मानो उन रागों का मानवीकरण कर दिया गया हो। भैरप्पा केवल संगीत के प्रेमी ही नहीं है बल्कि वे *तथ्यत: कलामर्मज्ञ* भी हैं। उनकी सार्वदेशिक दृष्टि इस तथ्य में दिखती है कि उन्होंने पश्चिमी शास्त्रीय संगीत पर लंदन के अल्बर्ट हॉल में हुए महीनों एक कार्यक्रम में भाग लिया था जब वे अपनी साहित्यिक यात्राओं के दौरान वहाँ गए हुए थे। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की तकनीकी शब्दावली जैसे *मंद्र, षड्ज, अवाज़, उठाव, स्वर, संचार, अलाप, ताल, साम, आवर्तन, टोन, मींड़, बोल, रियाज़* इनके उपन्यासों के विस्तार हैं और उनका ताना-बाना भी। यह भैरप्पा की शिल्पविद्या में निपुणता की सुंदरता है कि वे शब्द और भाषा में संगीतात्मकता को पिरो देते हैं।

वास्तव में अपने सबसे अच्छे अर्थों में भैरप्पा एक राष्ट्रीय लेखक हैं, न कि मात्र स्थानीय। कोई भी ऐसी बड़ी भाषा, राजकीय भारतीय भाषा नहीं है जिसमें उनकी पुस्तकों का अनुवाद न हुआ हो, जिससे विभिन्न स्थानीय पाठक उन्हें अपनी भाषा में पढ़ और आनन्द ले सकते हैं। वास्तव में यह अनुवाद इस सीमा तक सहज रहा है कि महाराष्ट्र के लोग सोचते हैं कि वे मराठी लेखक हैं और हिंदी पाठक वर्ग उन्हें हिंदी लेखक के रूप में मानता है। उन्होंने एक घटना का उल्लेख किया है कि किस तरह अपनी विदेश यात्राओं के दौरान एक बार सुदूर नार्वे में वे एक हिंदी पाठक से मिले जिसने उनसे यह पूछा कि क्या वे वही प्रसिद्ध लेखक भैरप्पा है जिन्हें उसने हिंदी में पढ़ रखा है। उनके अनुवादों का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि पुणे में एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जो केवल उनके मराठी अनुवादों पर केंद्रित थी। उनके उपन्यासों का

that starting with the physical (*Bhimakaya* is the story of a wrestler) ending up with the Metaphysical *Yaana* is an inner spiritual journey. After all, in our tradition to move from the physical (body) to the metaphysical (self) is the purpose of life and of literature too, isn't it?

Bhyrappa's love of music is congenital and even as a baby this was apparent. He has said in his Autobiography "only music draws me into myself and makes me introspective. Nothing else has this magical, mystical, magnetic power. There is a relationship between Hindustani Classical music and my creative energy and impetus" (Translation mine). There is hardly any musician worth the name he has not heard starting with Pandit Ravishankar and Ali Akbar. His love of Kumara Gandharva is as great as his admiration for Chaurasia. Some of the major characters he has created are musicians or students of music. Ranging from Honnathi in *Tantu* and Chandrika in *Sartha* to the characters in *Mandra* like Madhumita, Champa, Omkar Baba, Raja Sahib and culminating in Mohanlal, which novel brought Bhyrappa the most prestigious literary award, Saraswati Samman. In *Mandra* there is a detailed analysis of various ragas. What is special about *Mandra* is that Bhyrappa associates and approximates various characters with these ragas as if these characters are the ragas personified. Bhyrappa is not only a lover of music but an *aficionado – a connoisseur* in fact. His cosmopolitan outlook is seen in the fact that he attended a month-long musical programme of Western classical music in Albert Hall in London in one of his frequent visits there. The technical terminology of Hindustani classical music like *Mandra, Shadja, Avaz, Uthav, Swar, Sanchar, Alap, Tal, Sam, Avartan, Ton, Meend, Bol, Riyaz* is the very breadth of the novel and its warp and woof. This is the beauty of Bhyrappa's virtuoso concert performance in words and language.

Bhyrappa is indeed a national writer in the best sense of the term and not just a regional one. There is no major, official Indian language into which he has not been translated so that various regional readers can read and enjoy his novels in their own language. Indeed to such an extent that Maharashtrians think of him as a Marathi writer and the Hindi-reading public thinks of him as a Hindi writer. He mentions how in one of his visits abroad, in distant Norway, he met a Hindi reader who asked whether he was the same Bhyrappa the famous writer whom he had read in Hindi. An exclusive seminar was held in Pune, only on his Marathi translations. The locale and canvas

परिवेश और क्षेत्र भारत के विभिन्न क्षेत्रों तक विस्तृत है जैसे कि महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और संपूर्ण हिमालय क्षेत्र। यह विस्तार मात्र शाब्दिक ही नहीं है बल्कि इन परिवेशों का विवरण इस प्रकार आता है मानो वे इन क्षेत्रों में व्यक्तिगत रूप से निवास कर चुके हों। भैरप्पा शैक्षणिक सलाहकार और प्रशासक के रूप में दिल्ली में प्रतिष्ठित संस्था एन.सी.ई.आर.टी. में सेवाएँ दे चुके हैं और उस दौरान उन्होंने सभी राज्यों की यात्रा की और स्वयं को 'राष्ट्रीय प्रोफ़ेसर' पद के उपयुक्त साबित किया। यह भैरप्पा की अद्वितीय श्रेष्ठता है कि वह एकमात्र ऐसे भारतीय उपन्यासकार हैं जिनके छ: उपन्यासों का अनुवाद भारत की राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, प्राचीन शास्त्रीय भाषा संस्कृत में हुआ है। ये छ: उपन्यास हैं— 1. *धर्मश्री* (2000), 2. *सारथा* (2000), 3. *अवर्ण* (2008), 4. *वंशवृक्ष* (2012), 5. *तब्बालियु नीनादे मगने* (2000), 6. *पर्व* (2000)। यह भी उल्लेखनीय है कि इनमें से दो उपन्यासों का एक ही वर्ष में तथा तीन उपन्यासों का दूसरे वर्ष अनुवाद हुआ था। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कुछ और संस्कृत अनुवाद अभी प्रगति में हैं।

अंतत: व्यक्ति के रूप में डॉ. भैरप्पा के विषय में कुछ बातों का ज़िक्र नहीं छोड़ा जा सकता। बचपन और किशोरावस्था की आत्यंतिक दरिद्रता ने उन्हें अत्यधिक उदार और परोपकारी व्यक्तित्व में परिवर्तित कर दिया था। इसके लिए केवल दो असाधारण घटनाओं का उल्लेख काफ़ी होगा। जब उन्हें एक लाख रुपये की राशि वाला ए. एन. कृष्णराव (प्रसिद्ध कन्नड उपन्यासकार के नाम पर स्थापित) पुरस्कार प्रदान किया गया तो उन्होंने यह कहते हुए वापस कर दिया कि उनकी इच्छा है कि इसका उपयोग ए.एन. कृष्णराव के कार्यों पर शोध के पाठ्यक्रम में किया जाए। सरस्वती सम्मान मिलने की खुशी में जब कर्नाटक राज्य सरकार ने उनके साहित्यिक योगदान को मान्यता प्रदान करने के लिए पाँच लाख रुपये का पुरस्कार दिया तो अपने स्वभाव के अनुरूप उन्होंने सरकार को यह कहते हुए राशि वापिस कर दी कि इससे कन्नड माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की सहायता की जाए। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जब उन्होंने निजी रूप से ज़रूरतमंद व्यक्तियों और संस्थाओं की बिना किसी जानकारी के सहायता की। ऐसी उदारता और प्रेम भरी घटनाओं ने ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के बीच उन्हें लोकप्रिय बना दिया। उनके कृत्यों ने इस कहावत को साकार कर दिया कि अपने बाएँ हाथ को पता न चलने दो कि दाहिना हाथ क्या कर रहा है। यह वास्तव में एक महान लेखक का संक्षिप्त परिचय भर है। बहुत से प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान उनके जीवन में आते रहे, जिनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं—एस.आर.पाटिल सम्मान, मास्ति सम्मान, भारतीय भाषा परिषद सम्मान, एन.टी.आर, राष्ट्रीय पुरस्कार, गुलबर्गा विश्वविद्यालय और मैसूर विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त मानद डॉक्टरेट की उपाधि। इतने सम्मान और पुरस्कार भी उन्होंने उतनी ही उदारता और सहजता से ग्रहण किए जैसे सच्चे सज्जन विद्वान, दार्शनिक उपन्यासकार वे हैं।

श्री एस.एल.भैरप्पा को उनके उल्लेखनीय साहित्यिक योगदान के लिए अपना सर्वोच्च सम्मान 'महत्तर सदस्यता' अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी अत्यंत गर्व का अनुभव कर रही है।

– 5 जुलाई 2015, बेंगळूरु

of many of his novels extend to different parts of India like Maharashtra, Gujarat, Rajasthan, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Bihar and Himalayas and he has depicted the characters of these locales as if he has lived there. He has served as an educational adviser and administrator of Delhi in the prestigious N.C.E.R.T. and in that capacity he has travelled in every state in our nation and it is only in the fitness of things that he should have been appointed "National Professor". It is the unique distinction of Bhyrappa that he is the only Indian novelist that has six novels of his translated into Sanskrit, our National, cultural, ancient, classical language. These novels are (1) *Dharmashree* (2000), (2) *Sartha* (2000), (3) *Avarana* (2008), (4) *Vamshavruksha* (2012), (5) *Tabbaliyu Neenade Magane* (2012), (6) *Parva* (2012). It is also a record that two of the above novels were translated in one year and three in another. What is significant is that some more Sanskrit translations are in the offing.

Finally, a word about the person Dr. Bhyrappa may not be out of place here. The extreme poverty he had to suffer from as a youngster has made him now a very generous philanthropic person and just two unusual events may be mentioned. When he was given the A.N. Krishna Rao (a well-known Kannada novelist) award of a lakh of rupees, he promptly returned the amount to help the course of research about A.N.K's work. On his winning the Saraswati Samman, the Karnataka State Government gave him an award of rupees five lakh in recognition of his merit which, again, characteristically, he returned asking the government to use it to help Kannada medium students. There are many instances when he has privately helped individuals in need and organizations which needed charity. The "unremembered act of kindness and of love" have endeared him to the hearts of the poor and needy, illustrating the advice "let not your left hand know what the right hand gives". This is but a brief introduction to a truly great writer. Several prestigious awards and honours have come his way which includes S.R. Patil award, Masti award, Bharatiya Bhasha Parishad award, NTR National award, Honorary Doctorate from Gulbarga University and Mysore University but he wears them ever so lightly, the true gentleman scholar, philosopher novelist that he is.

Sahitya Akademi takes immense pride in bestowing its highest honour of the Fellowship on Sri S.L. Bhyrappa.

– 5 July 2015, Bengaluru

स्वीकृति भाषण

देश की इस सर्वोच्च साहित्यिक संस्था द्वारा मुझे अपने शिखर सम्मान के लिए चुनने हेतु मैं आभारी हूँ। अपनी स्थापना के बाद से अकादेमी सभी भारतीय भाषाओं में साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने तथा देश की अलग-अलग भाषाओं के लेखकों के बीच 'भारतीयता' बनाने का प्रयास कर रही है।

मैं यह सोचता हूँ कि मैं आपसे उन बुनियादी कारकों, जिन्होंने मेरी रचनात्मकता में योगदान दिया है, को साझा करूँ। मैंने अध्ययन के लिए दर्शन चुना और मैं इस विषय का शिक्षक बन गया। भारतीय और पाश्चात्य दोनों दर्शन के अध्ययन ने मुझे बौद्धिक भ्रम के बादलों तथा देश पर छाए भ्रम के बादलों से निकलने में मेरी सहायता की। इसने भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों की खोज करने में मेरी सहायता की। मैं ख़ुश हूँ कि मैं बौद्धिक तथा भावनात्मक रूप से एक भारतीय बना रहा।

यात्रा करना मेरे लिए हमेशा एक जुनून रहा है। मैंने व्यापक रूप से पूरे भारत की यात्रा की जिनमें ग्रामीण क्षेत्र भी शामिल हैं। गाँवों में उनके परिवारों के साथ ही ठहरा। इस अनुभव ने मुझे यह एहसास कराया कि भारती संस्कृति देश के समस्त भागों में एक ही है तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं की जड़ें समान या उनके तत्त्व समान हैं। समस्त नदियों, सहयोगी नदियों तथा यहाँ तक कि छोटी नदियों, पहाड़ों और शिखरों के नाम और गाथाएँ हमारे पुराणों और महाकाव्यों के साथ जुड़े हैं। अपनी विदेश यात्रा के दौरान जब मैं अपनी सीट के सामने छोटे परदे पर चलते नक़्शे में देखता हूँ कि विमान भारत से बाहर जा रहा है, तो मैं किसी ख़ास चीज़ को खोने की भावना से उदास हो जाता हूँ और अपनी वापसी यात्रा पर जब मैं देखता हूँ कि मेरा विमान भारत के आकाश में प्रवेश कर रहा है तब मैं शारीरिक रूप से दिल की धड़कनों के साथ रोमांच का अनुभव महसूस करता हूँ।

यद्यपि जब मैं कर्नाटक के दक्षिणी हिस्से में एक छोटे से गाँव के जीवन को दर्शाता हूँ तब भी मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मैंने भारत की नब्ज़ को छू लिया। इस प्रकार मेरा उपन्यास *गृहभंग* ठेठ भारतीय ग्रामीण जीव की तस्वीर माना जाता है तथा *दातू* (उल्लंघन) के हिंदी तथा अन्य उत्तर भारतीय भाषाओं में अनुवाद को हमारे देश की जातिगत समस्याओं को दर्शाने वाला श्रेष्ठ साहित्यिक चित्रण माना जाता है। इतिहास, विशेष रूप से भारतीय इतिहास मेरी रुचि का एक अन्य क्षेत्र है, जिसका परिणाम मेरी *पर्व, सार्थ* तथा *आवरण* रचनाएँ हैं। *तंतु* का लोकेल कर्नाटक से दिल्ली तथा बनारस तक फैला हुआ है तथा *मंद्र* महाराष्ट्र से संपूर्ण उत्तर भारत तक के क्षेत्रीय पात्रों सहित प्रसरित है। मराठी साहित्यिक दुनिया ने मुझे कन्नड में लिखने वाला एक मराठी लेखक बताया है तथा हिंदी पाठकों ने मुझे एक हिंदी लेखक के रूप में स्वीकार किया है। इसी प्रकार अन्य भारतीय भाषाओं के अनुवादों को पढ़ने वाले

Acceptance Speech

I am thankful to this highest literary body of the country for choosing me for its summit honour. Since its inception the Akademi is striving to promote excellence in literature in all the Indian languages and to create Indianness among the writers in different languages of the country.

I think it is appropriate to place before you the basic factors which contributed to my creativity. I chose philosophy for study and became a teacher in that subject. My study of both Indian and Western philosophies helped me to steer through the intellectual confusions that clouded and are clouding the country. It helped me to search the roots of India's culture and values. I am happy, intellectually and emotionally that I remained an Indian.

Travelling has been and is a passion with me. I have travelled extensively across the whole of India including rural areas, staying in villages and with village families. This experience made me realise that India's culture is the same in all the parts of the country and different Indian languages have common roots or common elements. All the rivers, contributory riverines and even small streams, hills, mountains and peaks carry with them the names and stories associated with our puranas and epics. During my travel out of the country, when I see on the moving map in the small screen in front of my seat that the aircraft is flying out of India, I feel depressed with the feeling of losing something vital and on the return journey when I see that my aircraft is entering the Indian sky I physically experience excitement and my heart starts throbing.

All these have made me touch the pulse of whole of India even when I depict the life of a small village in the southern part of Karnataka. Thus my novel *Grihabhanga* is considered a picture of typical Indian rural life and *Daatu* (Ullanghan in translations into Hindi and other north Indian languages) is hailed as the best literary depiction of our country's caste problems. History, especially Indian history has been another area of my interest and it resulted in *Parva, Saartha* and *Aavarana.* The locale of *Tantu* stretches from Karnataka to Delhi and Banaras, and that of *Mandra* extends from Maharashtra to whole of North India with characters of those areas. Marathi literary world has described me as a Marathi writer writing in Kannada and Hindi readers have accepted me as a Hindi writer. In the same way readers in translations

पाठकों ने मुझे भावनात्मक रूप से स्वीकार कर लिया है। मेरे छः उपन्यास संस्कृत में अनूदित हो चुके हैं तथा कुछ और का अनुवाद हो रहा है तथा संस्कृतविद मुझे उस भाषा का एक मूल लेखक मानते हैं। मेरा यह मानना है कि मुझे यह पहचान मेरे संपूर्ण देश के अनुभव के कारण मिली तथा मेरा लेखन साझा संस्कृति, साझा इतिहास तथा साझा लोकाचार को व्यक्त करने की एक प्रक्रिया है।

मुझे ख़ुशी है कि साहित्य अकादेमी ने अपनी महत्तर सदस्यता द्वारा इस सामान्य मान्यता पर अपनी मुहर लगा दी।

– एस.एल. भैरप्पा

of other Indian languages have emotionally accepted me. Six of my novels are translated into Sanskrit and some more are under translation and the Sanskritists consider me as an original writer in that language. I believe all this recognition is because of my experience of the whole of my country and my writing is a process of expressing its shared culture, shared history and shared ethos.

I am glad Sahitya Akademi has put its seal to this general recognition by its fellowship.

– S.L. Bhyrappa